प्रभात

छिपाएंगे नहीं, छापेंगे

facebook-Subharti Tv Twitter-Subharti Tv

www.subhartimedia.com | लखनऊ, शनिवार, 10 अगस्त 2019, मूल्य : 2.00, पृष्ठ : 12 | उत्तर प्रदेश–उत्तराखंड से प्रकाशित

300 वनडे खेलने वाले विंडीज के पहले खिलाड़ी बनेंगे गेल पेज -11

जल संकट एक गंभीर चुनौती, जागरूकता जरूरी

समस्या

- जल संचयन जरूरी वरना हो जाएगा जीवन संकट

लखनऊ-प्रभात

लगातार दो वर्षो के कमजोर मानसून के बाद 330 मिलियन लोग, देश की एक चौथाई आबादी, एक गंभीर सूखे से प्रभावित हैं। लगभग 50 प्रतिशत भारत सूखे जैसी स्थिति के साथ जूझ रहा है, विशेष रूप से पश्चिमी और दक्षिणी राज्यों व उत्तर.प्रदेश, इस साल औसत से कम बारिश होने के कारण गंभीर स्थिति मे है। नीती आयोग रिपोर्ट 2018 के अनुसार, 21 प्रमुख शहरों (दिल्ली, बेंगलुरु, चेन्नई, हैदराबाद और अन्य) 2020 तक शून्य भूजल स्तर तक पहुंचने की दौड़ में हैं, जिससे 100 मिलियन लोग भूजल की पहुंच से प्रभावित होगे।

स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज, लखनऊ के महानिदेशक (तकनीकी) डॉ. भरत राज सिंह ने बताया कि समग्र जल प्रबंधन सूचकांक (सीडब्ल्यूएमआई) रिपोर्ट में कहा गया है कि 2030 तक, देश की पानी की मांग उपलब्ध आपूर्ति से दोगुना होने का अनुमान है, जिससे लाखों लोगों के लिए गंभीर पानी की कमी हो सकती है और देश के सकल घरेलू उत्पाद में छह प्रतिशत का नुकसान हो सकता है। आज की तारीख मेंए भारत की 12: आबादी पहले से ही डे ज़ीरो से गुजर रही हैए जो सालो से अत्यधिक भूजल पंपिंग एक अकुशल और बेकार जल प्रबंधन प्रणाली और वर्षा की कमी के कारण पैदा हुई है। इसके अलावा रिपोर्ट में अनुमान लगाया गया है कि 2020 तक 21 भारतीय शहर भूजल से बाहर निकल जाएंगे (जोकि अधिकांश भारतीय शहरों में पानी का मुख्य स्रोत है), लगभग 40 फीसदी आबादी के पास 2030 तक पीने के पानी की कोई सुविधा नहीं होगी और पानी के संकट के कारण भारत की 6 फीसदी जीडीपी 2050 तक समाप्त हो जाएगी। इस रिपोर्ट के जारी होने के ठीक एक साल बादए भारत सरकार ने 2024 तक सभी ग्रामीण घरों में पीने के साफ पानी पाइप द्वारा उपलब्ध कराने के एक महत्वाकांक्षी लक्ष्य की घोषणा की है। हालांकि इस लक्ष्य

डॉ. भरत राज सिंह

सेए यह स्पष्ट नहीं है कि सरकार वर्तमान परिस्थितियों के तहत इस दुर्जेय लक्ष्य को कैसे प्राप्त करना चाहती है।

वर्तमान जल संकट की जड़ें मानसून की कमी या देरी से नहीं हैं, जैसा कि मीडिया द्वारा बनाई जा रही। वास्तव में यह सरकार की उपेक्षा गलत प्रोत्साहन और देश के जल संसाधनों का एकमुश्त दुरुपयोग है जिसने वर्तमान संकट को जन्म दिया है। यह भी जानना जरूरी है कि आने वाले दशकों में जलवायु परिवर्तन भारत की वर्तमान जल की कमी को अधिक बढावा देगी इसका मुख्य कारण वैश्विक तापमान मे बढोत्तरी (ग्लोबल वार्मिंग) जिसमे भारतवर्ष भी विश्व मे पृथ्वी के अंधाधुंध दोहनए वाहनो व तापीय विद्युत गृहों से उत्सर्जित ग्रीन.हाउस गैसों औद्योगीकरण आदि से तीसरे स्थान पर है, जिससे जलवायु परिवर्तन विनष्ट करने मे एक सहयोगी के रूप में उभर कर आया है। आज पूरे विश्व में जलवायु परिवर्तन की विभीषिका ने अलनीनो से भूमध्यरेखीय प्रशांत क्षेत्र से आने वाली मानसूनी हवा के पैटर्न मे उलटफेर कर दिया है और इसके दुष्प्रभाव से हमारे देश को भी पिछले कुछ दशकों से असामान्य रूप से गरमी का प्रभावए वर्षाऋतु मे परिवर्तन समुद्र के किनारे के क्षेत्रों में बेमौसम भारी बारिश मैदानी क्षेत्रों में सूखा और जल.वृष्टि में कमी का दुष्प्रभाव बढता जा रहा है, जो जल संकट का एक मुख्य कारण है।

इसी क्रम में शहरी क्षेत्रों में हरियाली के साथ-साथ हर कॉलोनी में तालाबों जल संचयन का मैंने एक प्रोजेक्ट तैयार किया है जिससे शहर की कालोनियों में स्थित पार्कों में भूमिगत जल संचयन हेतु तालाब भी बनाया जाना चाहिए, जिनके छत को कांक्रीट के पिलर पर छत डालकर, ऊपरी सतह पर मिट्टी की भराई होनी चाहिये, जिससे वह पार्क घास व फूल-पौधों से भी हरा-भरा रह सकता है। कॉलोनी की सड़कों के किनारे की नालियो को उक्त पार्क के जल सग्रहीत तालाब तक पहं चाया जाना चाहिए और उसके ओवरफ्लो को बडे नालों से जोड़ा जाना चाहिए। इस प्रकार बारिश के मौसम में जल संचयन के तालाब को रिचार्ज किया जा सकेगा और कॉलोनी के जल स्तर में भी अधिक सुधार होगा।